मास्लो का मानवतावादी अधिगम सिद्धान्त
(Maslow's Theary of Humanistic Learning)

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य :-

प्रसिद्ध अमेरिकी मनोवैज्ञानिक अब्राहम मास्लो ने मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाते हुए वर्ष 1954 में प्रकाशित अपनी 'Motivation and Personality' एवं व्यक्तित्व की व्याख्या 'माँग सिद्धान्त' (Need Theory) के आधार पर प्रस्तुत की थी। उनके माँग सिद्धान्त के अनुसार कहा जा सकता है कि व्यक्ति के भौतिक अथवा सामाजिक वातावरण की किसी माँग के कारण उसमें एक गत्यात्मक एवं निर्देशात्मक बल (Dynamic and Directing Force) उत्पन्न होता है जिसे अभिप्रेरणा कहते हैं एवं यह बल व्यक्ति को एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने के लिए अभिप्रेरित करता है।

मैस्लो का यह भी मानना था कि "व्यक्ति अपनी विविध माँगों की संतुष्टि के लिए जो प्रयास करता है, उन्हीं के परिणामस्वरूप उसे विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त होते हैं तथा ये अनुभव ही उसके लिए अधिगम के क्षेत्र बनते हैं।"

मैसलो ने व्यक्तित्व विकास व अधिगम में मानव मूल्यों (Human Values), व्यक्तिगत संवृद्धि (Personal Growth) तथा आत्म निर्देश (Self Direction) को विशेष महत्व दिया है। उनके अनुसार व्यक्तित्व के विकास में अभिप्रेरणात्मक प्रक्रियायें (Motivational Process) महत्वपूर्ण भूमिका

करती हैं एवं व्यक्तिगत लक्ष्यों की प्राप्ति की प्रवृत्ति अधिगम का मूलाधार होती है।

मैस्लो ने मानव अधिगम की प्रक्रिया में व्यक्तित्व माँगों को विशेष महत्व दिया है। यहाँ माँग से तात्पर्य किसी वस्तु के आभाव की अनुभूति से होता है जिसके कारण व्यक्ति का सामान्य व्यवहार प्रभावित होता है। जब तक माँग की पूर्ति नहीं होती है तब तक प्राणी में तनाव की स्थिति बनी रहती है। इन माँगों की पूर्ति करने हेतु ही प्राणी क्रियायें करने को अभिप्रेरित होता है। इस प्रकार व्यक्ति के प्रत्येक व्यवहार के मूल में माँगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो कालान्तर में अधिगम में परिणत हो जाती है। मैस्लो ने मानव माँगो को पाँच वर्गों में विभाजित कर के उन्हें पदानुक्रम प्रदान किया था। इनमें से प्रथम दो वर्गों की माँगों अर्थात् दैहिक माँगों एवं सुरक्षा माँगो को निम्नस्तरीय तथा अन्तिम तीन वर्गों की माँगों अर्थात् सामाजिक, अत्मसम्मान, एवं आत्मसिद्धि की मागों को उच्च स्तरीय माँग माना जाता है।

मैस्लो द्वारा दिये गये पाँच मानव माँग इस प्रकार हैं —

1. दैहिक माँग (Physiological Needs) :—

2. सुरक्षा माँग (Safety Needs)

3. सामाजिक माँग (Social Needs) :-

4. आत्म सम्मान माँग (Self-Esteem Needs),

5. आत्मसिद्धि माँग (Self-Actualization Needs).

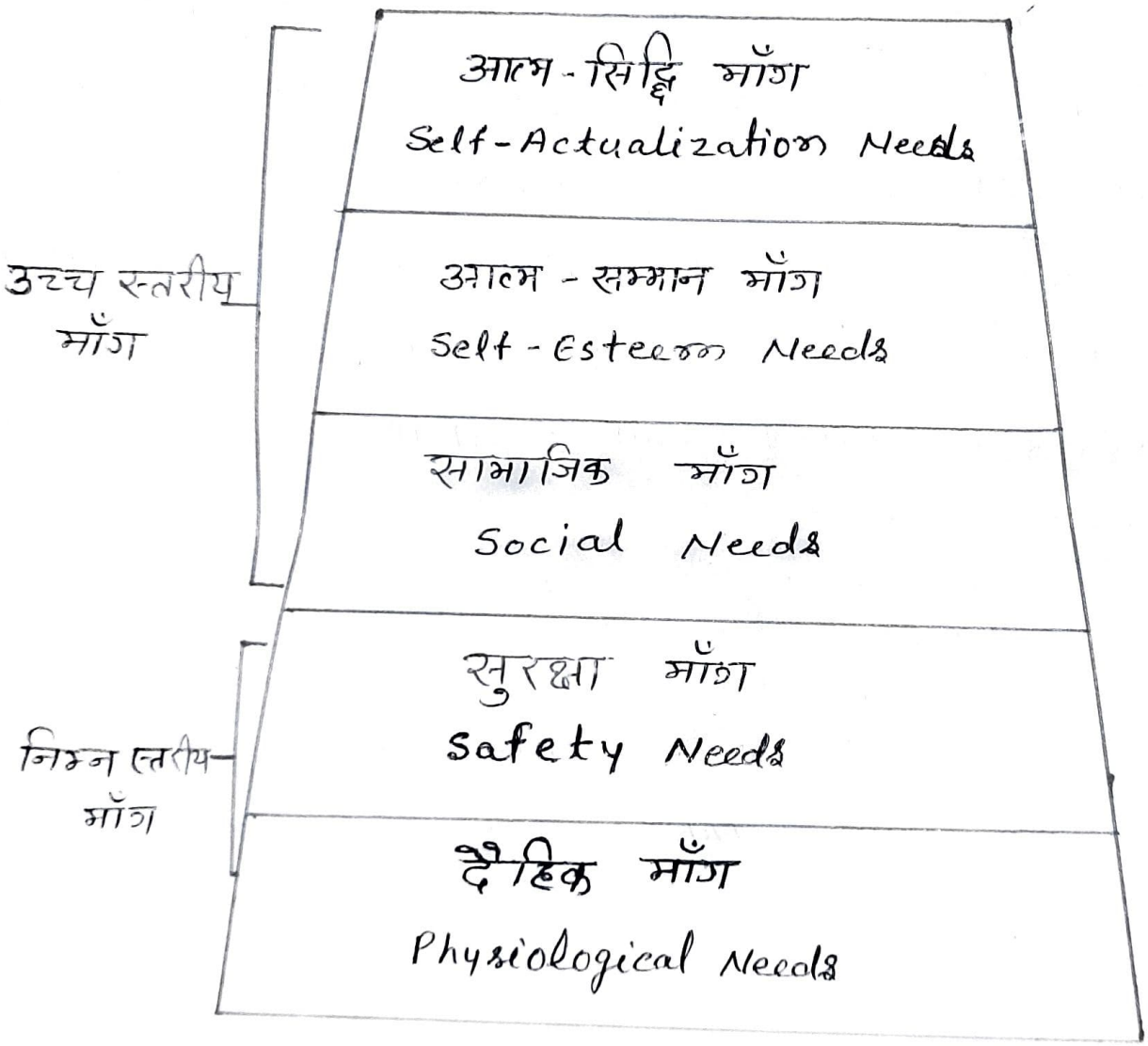

मैस्लो का माँग पदानुक्रम निदर्श
(Heirarchical Needs Model of Maslow)

1. दैहिक माँग (Physiological Needs) :- वो प्रेरक जो व्यक्ति में बुनियादी आवश्यकताओं के कारण उत्पन्न होते हैं, मनोदैहिक या शारीरिक या दैहिक प्रेरक कहलाते हैं।

जैसे :- भूख, प्यास, नींद, सेक्स, मल-मूत्र आदि।

इनकी पूर्ति के आभाव में व्यक्ति का शारीरिक सन्तुलन बिगड़ जाता है और उनके अस्तित्व को खतरा उत्पन्न हो जाता है। जब तक इन प्राथमिक आवश्यकताओं की संतुष्टि नहीं हो जाती, तब तक उच्च स्तर की आवश्यकताओं को निम्न स्तर का ही समझा जा सकता है। अतः इनकी सन्तुष्टि होना आवश्यक होता है, तभी उच्च स्तर की आवश्यकताएँ उत्पन्न होती हैं।

2. सुरक्षा प्रेरक (Safty Needs) :-

व्यक्ति अपनी शारीरिक या मनोदैहिक अवश्यकताओं की पूर्ति के बाद अपने जीवन की सुरक्षा के लिए प्रयास करता है ताकि उसके जीवन में कोई खतरा न हो और इसके लिए वह सदैव ही प्रयत्नशील रहता है।

3. सामाजिक माँग (Social Needs) :-

जब व्यक्ति मनोदैहिक और सुरक्षा प्रेरक से सन्तुष्टि प्राप्त कर लेता है तो वह समाज से प्रेम, स्नेह, लगाव, सहानुभूति की अपेक्षा करता है। इसके लिए वह हर सम्भव प्रयास

करता है, Live and let Live के सिद्धान्त में विश्वास रखता है।

4. आत्म-सम्मान माँग (Self-Esteem Needs) :-

समाज में मधुर सम्बन्ध स्थापित करने के साथ ही साथ वह आत्म सम्मान को बनाये रखने का प्रयास भी करता है। इसके आभाव में वह अपने जीवन को निरर्थक समझता है।

5. आत्म-सिद्धि माँग (Self Actualization Needs) :-

अंत में व्यक्ति की सबसे बड़ी इच्छा यह होती है कि वह समाज के हित में कुछ सहयोग दे सके। उसके बाद भी लोग उसे जानें। यह सहयोग सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, अध्यात्मिक, नैतिक आदि किसी भी रूप में हो सकता है।